क्रांतिकारी प्रीतिलता पर विशेष

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 32 अंक 364 मार्च–2026

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक हिंदी साहित्य

हरीश त्रिवेदी अवधेश प्रधान
सदानंद शाही अच्युतानंद मिश्र

कहानियां

पंकज सुबीर सरोजिनी नौटियाल
दामोदर खड़से अनामिका प्रिया
मदन गोपाल लढ़ा (राजस्थानी)
श्यामल भट्टाचार्य (बांग्ला)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 364, मार्च 2026

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

ज्ञान से विमुख ज्ञान : **संपादकीय** 5

कहानियां

शाल-वन की शालभंजिका : **पंकज सुबीर** 13
सब हो जाएगा : **सरोजिनी नौटियाल** 28
अंतिम इच्छा : **दामोदर खड़से** 35
हादसे के बाद : **अनामिका प्रिया** 42
बांथ (राजस्थानी) : **मदन गोपाल लढ़ा**
(अनुवाद : **स्वाति**) 47
डायनासोर के वंशज (बांग्ला) : **श्यामल भट्टाचार्य**
(अनुवाद : **कुमार शाश्वत**) 50

कविताएं

राकेश रंजन/ओम नागर/राजेंद्र उपाध्याय/पूनम मनु/मनोज कुमार झा/मीनू मदान/श्रद्धा टिबड़ेवाल/नरेंद्र पुंडरिक/कैलाश केशरी/देवेश पथ सारिया/गिरीश पंकज/जियाउर रहमान जाफरी 59

परिचर्चा

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक हिंदी साहित्य : **हरीश त्रिवेदी/अवधेश प्रधान/सदानंद शाही/अच्युतानंद मिश्र**
(प्रस्तुति : **सुशील कान्ति**) 71

आलेख

क्रांतिकारी शहीद प्रीतिलता वाद्देदार : **सुधीर विद्यार्थी** 87
एआई के अंधेरे पक्ष का सच : **मुकेश असीमित** 94

विश्वदृष्टि

एलिस मुनरो का वक्तव्य
(अनुवाद : **बालकृष्ण काबरा 'एतेश'**) 98

डेरेक वॉलकाट की कविताएं
(अनुवाद : **शुभा द्विवेदी**) 101

समीक्षा संवाद

हिंदी कविता का तापमान : **निशांत**

(आर चेतनक्रांति, हेमंत देवलेकर और जमुना बीनी की पुस्तकें) 103

सोशल मीडिया 113

विविध

पाठक संसद/किताबें 115

लघुकथा

चिह्न : **महावीर राजी** 41

बतरस

मृत्यु और प्रेम का जीवन-उत्सव : **कुसुम खेमानी** 118

देश-देशांतर

महादेवी वर्मा/ पाब्लो नेरूदा (स्पानी)

मल्टी मीडिया

अमृता प्रीतम : एक मुलाकात

कविताओं में रेखांकन :
नेट से साभार

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-

सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये

वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये

त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2880/-

आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर

भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।

भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**

जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक

समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार : **मीनाक्षी दत्ता**

वितरण तथा अन्य कार्य : **अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

ज्ञान से विमुख ज्ञान

जर्मन महाकवि गेटे (1749-1832) की प्रसिद्ध कृति है 'फाउस्ट'। इसका मुख्य चरित्र फाउस्ट ज्ञान से लबालब भरा एक ऐसा व्यक्ति है जो दर्शन, कानून, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, धर्मशास्त्र सब पढ़ चुका है और अपने को सर्वज्ञ समझता है। वह अनुभव को भी अपने नियंत्रण में लेना चाहता है। गेटे ने इस कृति में ज्ञान-दंभ की आलोचना करते हुए दिखाया है कि अपनी असीमित महत्वाकांक्षाओं के कारण फाउस्ट ज्ञानी होने के बावजूद किस तरह शैतान तक से समझौता कर लेता है।

फाउस्ट पृथ्वी की आत्मा को बुलाता है। पृथ्वी उसके अहंकार से भरे ज्ञान और प्रकृति की सारी चीजों पर नियंत्रण की उसकी अनैतिक इच्छा देखकर उसे दुत्कारती है, क्योंकि वह प्रगति का दूत दिखते हुए भी वस्तुत: विनाश का मार्ग है। उसका ज्ञान शीर्ष पर है, पर आत्मा मर चुकी है। वह विकास करना चाहता है, पर संसार के उच्च आदर्शों को मलबे में बदलकर। गेटे की महान रचना 'फाउस्ट' को उत्तर-ज्ञानोदय काल की पश्चिमी आत्मा का दर्पण कहा जा सकता है।

21वीं सदी में भारतीय ज्ञान परंपरा पर हो रही नई चर्चा गेटे के चरित्र फाउस्ट की याद दिलाती है, हालांकि 'उत्तर-सत्य' की एक भिन्न पृष्ठभूमि में। फाउस्ट एक ऐसा ज्ञानी था, जो ईश्वर, नैतिकता और प्रेम सबसे विच्छिन्न हो चुका था। वह ज्ञान का उपयोग सत्ता के लिए करता है।

आखिर ज्ञान किसलिए? जीवन में प्रेम, स्वतंत्रता और न्याय के लिए या प्रभुत्व के लिए? फाउस्ट दुनिया को जीत लेता है लेकिन प्रेम खोकर। वर्तमान युग का इंसान भी सुख-सुविधाओं के लोभ में अपनी संवेदना, स्वतंत्रता और न्याय की बलि देने के लिए हमेशा तैयार है, कुछ ऐसी ही हवा बह रही है।

गेटे के संदर्भ में यह भी जानना चाहिए कि 20वीं सदी में हिटलर को उसके मानवतावाद, सार्वभौमिकता और बहुलता के विचारों से बड़ी समस्या हो रही थी। उल्लेखनीय है कि जर्मनी का होकर भी गेटे ने ज्ञान को अपने देश की सरहदों तक सीमित नहीं माना था। उसने कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' की जमकर प्रशंसा की, इसका अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा था। हिटलर जब सत्ता में आया